International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
e-ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(I), January - March, 2026, pp. 25-28

कालिदास के काव्यों में नदियों का पर्यावरणीय चित्रण

डॉ. मिथिलेश कुमार*

अतिथि सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

*Corresponding Author: mithilesh96081@gmail.com

Citation: मिथिलेश कुमार (2026). कालिदास के काव्यों में नदियों का पर्यावरणीय चित्रण. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(01(I)), 25–28

सार

महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में प्रकृति के विविध रूपों का अद्वितीय चित्रण किया है, जिनमें नदियों का विशेष स्थान है। उनके काव्य में नदियाँ केवल जलधारा मात्र नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भावनात्मक प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत होती हैं। रघुवंश में गंगा की पवित्रता, महिमा और लोककल्याणकारी स्वरूप का उल्लेख मिलता है। कुमारसंभव में हिमालय से उद्भूत नदियों का सौंदर्य तथा उनके तटों पर पुष्पित वनस्पतियों और जीव–जंतुओं की रमणीयता का चित्रण है। मेघदूत में नदियों को प्रिय–प्रियसी के बीच संदेशवाहक मेघ के मार्ग में पड़ने वाले स्थलों के रूप में दर्शाया गया है, जहाँ उनकी कलकल ध्वनि और शीतल जल भावनात्मक वातावरण का सृजन करते हैं। नदियों के प्रवाह को कालिदास ने मानव जीवन के उतार–चढ़ाव से भी जोड़ा है। कहीं नदियों का शांत प्रवाह प्रेम और शांति का प्रतीक है तो कहीं उनका तीव्र वेग उत्साह और पराक्रम का द्योतक है। इस प्रकार कालिदास ने नदियों को केवल भौगोलिक इकाई न मानकर जीवनदायिनी, प्रेरणास्रोत और भारतीय संस्कृति की संवाहिका के रूप में चित्रित किया है। उनके काव्यों में नदियाँ मानवीय संवेदनाओं, धार्मिक आस्था और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम प्रतीत होती हैं।

शब्दकोशः *प्राकृतिक सुषमा, लौहित्य, मन्दाकिनी, भोटियाकोसी, तम्बकोसी, लिखुकोसी, दूधकोसी, मालविकाग्निमित्र।*

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास ने प्राकृतिक सुषमा के वर्णन के क्रम में आर्यावर्त के अनेकानेक स्थलों के वर्णन के क्रम में गंगा आदि विशिष्ट नदियों का उल्लेख अपनी रचनाओं के अन्तर्गत किया है जिनका अनुसंधानात्मक विवेचन के क्रम में जो स्वरूप उपलब्ध होता है वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। भारतवर्ष में बहने वाली नदियों का विस्तार हिमालय की पर्वत श्रेणी से हुआ है। कालिदास के काव्यों में वर्णित नदियों में से कुछ भारत के मध्यवर्ती से निकलकर उत्तर भारत की ओर बहती है। हिमालय से निकलकर बहने वाली नदियों का जल उसके पिछले तुषार संघात से आता है। इस प्रकार इन नदियों को मानसून की वर्षा सर्वदा निर्भर करना नहीं पड़ता। हिमालय की बर्फ और मानसून की वर्षा दोनों इन्हें घेरे रखते हैं। यही कारण है कि ये कभी सूख नहीं पाती। (रघुवंश महाकाव्यम् 2.26) पहाड़ों में वे गरजती हुयी दरी मुखों से निकलकर गंगा प्रपात महाकोशी प्रपात में झरने बनाती

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

शिलाखंडों को तोड़ती बहती है। हिन्दुस्तान के निचले मैदानों पर उनकी गति मन्द पड़ जाती है। जिन तीन भारत की विशिष्ट धाराओं का कालिदास ने वर्णन किया है, वे निम्नलिखित हैं–

(1) सिन्धु (2) गंगा और (3) उसकी सहायक नदियां यमुना, सरयू, सरस्वती, शोण, महाकोशी, मालिनी, मन्दाकिनी, तमसा, सुरभि तनया, वेत्रवती, सिन्धु, निर्विन्ध्या, गन्धवती, गम्भीरा और शिप्रा, लौहित्य अथवा ब्रह्मपुत्र।

इन उत्तर और मध्य भारत में बहने वाली नदियों के अतिरिक्त उड़ीसा और दक्षिण भारत में बहने वाली कुछ नदियों का भी कालिदास ने उल्लेख किया है, इनके नाम हैं, नर्मदा (रवा अथवा गौतमी), बरदा, गोदावरी, कावेरी, ताम्रपर्णी और मुरला। इनमें से कई तो आज भी अपने प्राचीन नामों से ही विख्यात हैं परन्तु कुछ के सम्बन्ध में फिर भी आवश्यक वक्तव्य है।

शोध के उद्देश्य

- कालिदास के प्रमुख काव्योंकृऋतुसंहार, मेघदूत, रघुवंश, कुमारसंभवकृमें नदियों के उल्लेख का विश्लेषण करना।
- नदियों के माध्यम से कवि द्वारा प्रकृति और मानव जीवन के संबंध को समझना।
- नदियों के धार्मिक, सांस्कृतिक और काव्यगत महत्व को उद्घाटित करना।

गंगा, जिसके अन्य भी अनेक नाम, जहनुकन्या, जाह्नवी और भागीरथी कवि ने दिये हैं, हिमालय में गंगोत्री से निकलकर ब्रह्मपुत्र के साथ डेल्टा बनाती हुई पूर्वसागर में गिरती है। यमुना बन्दरपुच्छ पर्वत के एक भाग कलिन्दगिरी से निकलती है, जिस कारण उसका नाम भी कलिन्दकन्या पड़ा। यमुना प्रयाग के पास गंगा से मिलती है और दोनों के संगम का बड़ा माहात्म्य है। उसे तीर्थराज कहा गया है जहां स्नान प्राचीन काल से पावन माना गया है। प्रयाग के इस गंगा यमुना के संगम का वर्णन करता कवि फूला नहीं समाता। सित और असित दोनों धाराओं के संगम पर स्नान करने की महिमा का वह बखान करता है (सितासिते सरिते यत्र संगते)। सरयू अवध में बहने वाली घाघरा नदी का दूसरा नाम है। अयोध्या का नगर आज ही की भांति तब भी सरयू के ही तट पर बसा था। सरयू का निकास कुमायूं के पहाड़ों से है और काली नदी के संगम के बाद इसका नाम सरयू अथवा सरजू, घाघरा और देवा पड़ता है। गंगा के साथ बिहार में छपरा के समीप इसके संगम की महिमा कवि ने विशेष उत्साह से गायी है। सरस्वती का उद्गम हिमालय पर्वत श्रेणी के शिवालिक भाग में सिरमूर की पहाड़ियों में है जहां से निकलकर वह अम्बाला जिले में आदिब्रदी के समीप मैदान में उत्तरती है और शीघ्र दक्षिण के रेगिस्तान में खो जाती है। प्राचीन काल में आर्यों द्वारा उसके तट पर अनन्त यज्ञ होने के कारण सरस्वती अत्यन्त पवित्र मानी जाती है। अनेक बार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से निकल और खोकर अन्त में यह कच्छ की खाड़ी में गिरती है। कवियों ने इसे भूमि के नीचे बहती माना है। ऋग्वेद में इसके समुद्र में गिरने का उल्लेख है। परन्तु पीछे की कथाए इसको खोकर प्रयाग के पास गंगा और यमुना के साथ संगम बनाना मानती हैं। कालिदास महाभारत का अनुकरण करते हुए लिखते है कि भारत–युद्ध के बाद बलराम ने सरस्वती के ही तट का सेवन किया। (रघुवंश महाकाव्यम् 13.62, 14.30)

शोण का निकास नर्मदा के उद्गम से प्रायः पांच मील पूर्व अमरकण्टक के पठार में हैं। वहां से निकलकर शोण पहले उत्तर, फिर पूर्व की ओर प्रायः पांच सौ मील बहकर पटना के पश्चिम गंगा में गिरती है। कालिदास ने इस संगम का भी उल्लेख किया है। और साथ ही मगध की राजधानी पर पुष्पपुर (पाटलिपुत्र, पटना) का भी जो कभी उस संगम पर खड़ा था। महाकोशी नेपाल को सातो कोसियों (मिलम्बी, सोनकोसी अथवा भोटियाकोसी, तम्बकोसी, लिखुकोसी, दूधकोसी और अरूण–पद्म महाभारत, वन, अ. 84) और तमाम को सम्मिलित धारा है। इन सात कोसियों में से तम्ब अथवा तमार और पुराण, स्वर्ग, अ. 19; लिखु सोनकोसी में और वरुन अरुणकोसी में गिरती है। मालिनी सहारनपुर जिले और अवध में बहती हुई अयोध्या से प्रायः पचास मील पहले घाघरा में गिरती है। इसी का मेगस्थनीज ने एरिनेसेस नाम से उल्लेख किया है। शकुन्तला के धर्मपिता महर्षि कण्व का आश्रम इसी नदी के तट पर हरिद्वार से लगभग तीस मील पश्चिम था। शतपथ ब्राह्मण में उसे नदपित् कहा गया है। लैसन के अनुसार मालिनी का वर्णन नाम श्चुकाश है जो सरयू की पश्चिमी शाखा है। (रघुवंश महाकाव्यम् 8.95)

मन्दाकिनी मूलतः गंगा की ही एक भुजा का नाम था। बाद में हिमालय स्थित अन्यु वस्तुओं को ही भाँति इसका सम्बन्ध भी स्वर्ग से कर दिया गया। मन्दाकिनी गंगा की एक भुजा अथवा मैदानों में उतरने के पूर्व स्वयं गंगा की ही इस प्रकार संज्ञा हुई। परन्तु काली गंगा अथवा पश्चिमी काली अथवा मन्दागिन का नाम भी

जो गढ़वाल में केदार पहाड़ों से निकलती है. मन्दाकिनी ही है। यह अलकनन्दा की सहायक नदी है जो इस प्रकार गंगा की भी हुई। मन्दाकिनी का उल्लेख कवि ने अनेक स्थलों पर रघुवंश, कुमारसम्भव् क्रिमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र और मेघदूत ने किया है। विक्रमोर्वशीय और मेघदूत को मन्दाकिनी प्रणामतः एक ही है अर्थात् पहाड़ों से नीचे उतरने के पूर्व गंगा अथवा अधिक सम्भावित अलकनन्दा की मन्दागिनी कहलाने वाली शाखा कालीगंगा। रघुवंश की मन्दाकिनी बुन्देलखण्ड में चित्रकूट के पास से बहने वाली पैसुनी की सहायक नदी मन्दाकिनी है। कालिदास ने भी इसका चित्रकूट से होकर बहना लिखा है। पुष्पकविमान से देखने से मन्दाकिनी दूरी के कारण पर्वत के पास कवि को पृथ्वी के गले से लटकने वाले मुक्ताहार की भांति लगी। अप मालविकाग्निमित्र की मन्दाकिनी निःसन्देह एक तीसरी नदी है. सम्भवतः दक्कन में बहने वाली यह नर्मदा भी हो सकती है क्योंकि अनेक बार स्थानीय नदी को विख्यात और पावन नदी का नाम प्राचीन भारत में दिया गया है। इस सुझाव की पुष्टि इससे भी होती है कि मालविकाग्निमित्र के निर्णयसागर वाले संस्करण में मन्दइणीदीरे के स्थान पर णम्भदातीरे पाठ मिलता है तमसा का उल्लेख कवि ने कुल तीन बार, रघुवंश के सर्ग 9 में दो बार, (20, 72) और वर्ग 14 में एक बार (76) किया है। परन्तु इस दिशा में भी दूरी की समस्या इस नदी की सही पहचान में बाधक होगी।

सुरभितनया चम्बल का ही दूसरा नाम है। विन्ध्य पर्वत की ऊँची भूमि में जनपद नामक पहाड़ियों में इसका उद्गम है। कालिदास ने मेघदूत में उस पौराणिक विश्वास को फिर ये दोहराया है जिसमें रन्तिदेव द्वारा गोमेध से बहे गो–रक्त से चर्मण्वती की उत्पत्ति मानी गयी है। महाभारत में यह कथा दी हुई है। वेत्रवती भूपाल की बेतवा है जो यमुना की सहायक नहीं है और जिसे तट पर प्राचीन विदिशा आदि भिलसा के रूप में खड़ी है। सिन्धु मालवा की काली सिन्ध है जो महाभारत में दक्षिण सिन्धु कही गयी है। निर्विन्ध्या बेतवा और सिन्धु के बीच बहती है और चम्बल की सहायक नदी है। निर्विन्ध्या मालवा की काली सिन्ध मानी गयी है, परन्तु यह पहचान सही नहीं जान पड़ती क्योंकि काली सिन्ध का उल्लेख कालिदास ने स्वयं सिन्धु में किया है अतः निर्विन्ध्या का वर्तमान प्रतिनिधि नेवज को मानना पड़ेगा जो बेतवा और काली सिन्ध के बीच बहती हुई चम्बल से जा मिलती है। गम्भीर मालवा की शिप्रा की सहायक नदी है। गन्धवती शिप्रा की ही एक छोटी शाखा है जिसके तट पर महाकाल का विख्यात मंदिर खड़ा है। शिप्रा मालवा की वह विख्यात नदी है जिसके तट पर उज्जैन बसा है। यह चम्बल में गिरती है। और आज भी अपने प्राचीन नाम को ही वहन कर रही है। (मेघदूतम् पूर्व, 49)

लौहित्य ब्रह्मपुत्र है जो कालिदास के अनुसार प्राचीन प्राग्ज्योतिष राज्य की पश्चिमी सीमा बनाती थी। कपिशा का पार्जिटर में कसई (कोस्या) माना है जो बंगाल के मिदनापुर जिले में होकर बहती है। यह एकीकरण सर्वथा सही है कालिदास के समय कपिशा उत्कल और कलिंग की उत्तरी सीमा थी। प्राचीन ताम्रलिप्ति इसी नदी के तट पर अवस्थित था।

सिन्धु और लौहित्य को छोड़ ऊपर की सारी नदियां या तो स्वतंत्र नद है या उनकी सहायक धाराएँ और सभी गंगा के मैदान और मध्य भारत के एक बड़े भाग को सींचती हैं। (रामायण, अयोध्या काण्ड, 68)

इसके विपरीत प्रायद्वीप की नदियाँ विस्तृत पठार की पहाड़ियों से निकलती है और मानसून की वर्षा से अपना जल पाती है। पठार के दलाव के कारण ये नदियां अधिकतर पश्चिमी घाट से निकलकर पूर्वसागर अथवा बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं कवि ने इनमें से निम्नलिखित का उल्लेख किया है, नर्मदा–रेवा अथवा गौतमी, वरदा, गोदावरी, कावेरी, ताम्रवर्णी और मुरला। (रघुवंश महाकाव्यम् 13.48)

कालिदास काव्यों में नदियों का विवेचन

- **ऋतुसंहार में**

'ऋतुसंहार' में कालिदास ने ऋतुओं के विविध रूपों का चित्रण करते हुए नदियों का सौंदर्यपूर्ण उल्लेख किया है। ग्रीष्म ऋतु में सूखती नदियाँ जीवन के विराम का प्रतीक हैं, तो वर्षा ऋतु में उमड़ती–घुमड़ती नदियाँ जीवन–स्फूर्ति का संकेत देती हैं।

- **मेघदूत में**

'मेघदूत' में यक्ष अपनी प्रियतमा को संदेश पहुँचाने के लिए मेघ को दूत बनाता है। मार्ग का निर्धारण करते समय अनेक नदियों का सजीव चित्रण मिलता हैकृजैसे नर्मदा, चर्मण्वती (चंबल), शिप्रा। यहाँ नदियाँ भूगोल की नहीं, बल्कि विरहाकुल हृदय की यात्रा का आधार हैं।

- **कुमारसंभव में**

'कुमारसंभव' में हिमालय और उसकी कन्या पार्वती का वर्णन करते हुए गंगा नदी का विशेष महत्त्व दिखता है। गंगा हिमालय से उद्‌गमित होकर शुद्धता, पवित्रता और दिव्यता का प्रतीक बनती है। शिव के जटाओं में गंगा का अवतरण नदियों को दार्शनिक ऊँचाई प्रदान करता है।

- **रघुवंश में**

'रघुवंश' महाकाव्य में गंगा, सरयू, और अन्य नदियों का उल्लेख है। रघुवंशी राजाओं की यात्राओं और यज्ञ–क्रियाओं के प्रसंगों में नदियाँ जीवन–धारा और पवित्रता का रूप लेती हैं।नदियों का

सांस्कृतिक और काव्यगत महत्त्व

- प्रकृति–सौंदर्य का माध्यम रू नदियाँ ग्रामीण और प्राकृतिक जीवन के सौंदर्य को उभारती हैं।
- मानवीकरण रू कालिदास नदियों को प्रायः जीवंत रूप देते हैंकृवे कभी हँसती, कभी मंथर गति से बहती, तो कभी उफनती हैं।
- धार्मिक प्रतीक रू गंगा, नर्मदा जैसी नदियाँ पवित्रता और मोक्ष का प्रतीक हैं।
- भावनात्मक प्रतीक रू नदियाँ विरह, मिलन, यात्रा और जीवन–चक्र की प्रतीक बनकर सामने आती हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार कालिदास ने नदियों को मात्र प्राकृतिक धारा न मानकर भारतीय संस्कृति की संवाहिका, जीवन की प्रेरणास्रोत तथा मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। उनके काव्यों में नदियाँ प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक चेतना का संगम प्रस्तुत करती हैं। संस्कृत साहित्य में प्रकृति–चित्रण की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। महाकवि कालिदास (चतुर्थ–पंचम शताब्दी ईस्वी) को 'प्रकृति कवि' कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने काव्यों में मानव और प्रकृति के मधुर संबंधों का अनूठा चित्रण किया है। हिमालय, वन, ऋतु और नदियाँ–सभी उनके काव्य–संसार में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। विशेषतः नदियाँ केवल भौगोलिक स्थल नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, दार्शनिक और भावात्मक प्रतीकों के रूप में भी प्रस्तुत होती हैं। कालिदास के काव्यों में नदियाँ केवल भौगोलिक या प्राकृतिक वस्तु नहीं हैं, वे भावनाओं की वाहक, संस्कृति की पहचान और जीवन–दर्शन की प्रतीक हैं। उन्होंने नदियों को जीवंत रूप देकर साहित्य में प्रकृति और मानव जीवन का अद्‌भुत सामंजस्य प्रस्तुत किया। इस प्रकार कालिदास के काव्यों का नदी–वर्णन हमें भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और सौंदर्य–बोध की गहन झलक प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. रघुवंश महाकाव्यम् 2.26
2. रघुवंश महाकाव्यम् 13.62, 14.30
3. रघुवंश महाकाव्यम् 8.95
4. मेघदूतम् पूर्व, 49
5. रामायण, अयोध्या काण्ड, 68
6. रघुवंश महाकाव्यम् 13.48.

❑❑❑